भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 09 | अंक 20 | उदयपुर शुक्रवार 01 नवंबर 2024 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

अनंत किरणों का प्रकाश लिए दीपक

-डॉ. तुक्तक भानावत-

दीपावली का मूल भाव अन्धकार में प्रकाश की परिव्याप्ति है। प्रकाश मंगल का, शुभ का, लाभ का, उल्लास का और चैतन्य का प्रतीक है। सबसे बड़ा अंधकार अज्ञान का, असत का, मृत्यु का है। ज्ञान, सत और अमरता इनका प्रकाश है। इस दिन रावण रूपी असत पर सत रूपी राम पुरूषोत्तम बन अयोध्या लौटे तब वहां की जनता ने असंख्य दीपकों से उनका स्वागत किया। उनकी आरती उतारी और अपना उल्लास व्यक्त किया। भगवान महावीर को इसी दिन निर्वाण हुआ और वे परमपद तीर्थंकर को प्राप्त हुए। अपनी साधना, तपस्या और ज्ञानाराधना से उन्होंने अपने तमस के कलुष को धोकर धवल उज्ज्वल रूप चेतन तत्व को प्रकाशित एवं आलोकित किया।

हमने दीप जलाकर उनका अनुसरण किया ताकि हम भी उनके कर्म-सान्निध्य तथा विचार-सान्निध्य को अपने जीवन का अंग बनाकर आलोक का वरण कर सकें इसलिए घर बाहर चौक मेड़ी चबूतरा सबको दीपक से सजाया। ये दीपक तब घी से प्रज्वलित होते थे। धीरे-धीरे घी की जगह तेल पूरा जाने लगा और अब तेल की बजाय मोमबत्तियों ने ले ली है। जहां बिजली है वहां उसी का प्रकाश विभिन्न रूपों, रंगों तथा छवियों में द्युति फैलाता मिलता है। अब घरों की, बाजारों की रौनक दीपक नहीं, बिजली का प्रकाश हो गया है। इस बीच पटाखा संस्कृति का जो जाल फैला उसने तो कमाल ही कर दिया।

आजादी के बाद खासतौर से रोटी, कपड़ा और मकान इन तीनों में, जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं में, बदलाव आता दिखाई दिया। गेहूं खाने का रिवाज बड़ों में था बाकी सब मक्की जौ ज्वार खाते थे। अब जौ ज्वार मनुष्यों का भोजन नहीं रहा। दालों की जगह सब्जी ने ले ली। कपड़ों में तो गजब का बदलावा आया। मकान भी वे नहीं रहे। पहले सबके सब कच्चे मकान हुआ करते थे। दीवाली पर उनकी लींपाई होती और फिर आंगन को भांति-भांति के मांडणों से मुलकाया जाता। खानों से पीली लाई जाती। उसमें गोबर मिलाकर आंगन लींपा जाता। मरड़े से दीवालें लींपी जाती। इससे पूरा मकान सुवासित हो उठता। आंगन पर हड़मची-गेरु से कोर किनारी निकाली जाती और फिर सफेद खड़ी से जो मांडणें मांडे जाते उससे मकान की सुन्दरता में चार चांद लग जाते।

दीपावली लक्ष्मी का ही पूजन नहीं, सरस्वती की आराधना का पर्व भी है। इस दिन लक्ष्मी के रूप में पैसे कौड़ी तथा गहनेगांठे तो पूजे ही जाते हैं किन्तु सरस्वती स्वरूप कागज कलम भी पूजी जाती है। नई बही प्रारंभ कर नया हिसाब शुरू किया जाता है। वंशावली बांचनेवाले बहीभाट बड़वाजी अपनी भारी भरकम एक-एक मन के वजन की बहियां तक पूजते हैं किन्तु अब लक्ष्मी का स्वरूप भी बदल गया है। व्हाईट मनी की बजाय अब ब्लेक मनी का बोलबाला बढ़ गया है और पोथीवाचक भी अब अपनी उन परम्पराओं से बंधे रहना नहीं चाहते लेकिन तब भी प्रतीक रूप में चांदी के सिक्के में ढली लखमी-सरसती सर्वत्र पूज्य भाव लिये है।

हमारे देश का राष्ट्रीय धन गोबर ही है जो कृषि का मूल आधार है। यही कारण है कि कृषि के मुख्य उपजीव्य गाय और बैलों की पूजा की जाती है। उनके सींग रंगे जाते हैं। मेंहदी कुंकुम से उन्हें सिणगारा जाता है। इनकी दौड़ आयोजित की जाती है। इनके आधार पर आनेवाले वर्ष के शुभाशुभ शकुन लिये जाते हैं। इन्हीं के गोबर से गोरधन बनाकर घर-घर उनकी पूजा की जाती है।

गोरधन पूजा का यह एक विशेष अनुष्ठान ही है जब गोरधन के बहाने गोबर का महत्व प्रतिपादित किया जाता है। नई फसल के रूप में गन्ने की पूजा कर ही गन्ने का विविध उपयोग प्रारंभ किया जाता है लेकिन अब हर घर में गाय नहीं है। कृषि नहीं होने से बैल भी नहीं मिलेगा तो गोबर और उसकी गोरधन पूजा की पवित्र भावना का अभाव ही मिलेगा।

गांवों में अलबत्ता घर-घर गोरधन पूजने की परिपाटी मिलेगी। पहले गोधन बड़ा धन माना जाता था। लाख-लाख गायें तो दान ही में दी जाती थी। गुजरात का गोधरा तो गायों की ही धरती रहा इसीलिए उसका यह नाम ही चल पड़ा। अब गाय का वह मातृभाव उस तरह की श्रद्धाभिव्यक्ति लिए नहीं रहा तब दीवाली भी इनके बिना सूनी ही लगती है। माटी का दीपक अपनी मिट्टी से हमारी ममता को जोड़ता है। रूई हमारा तन ढकती है और उसका रेशा-रेशा हमारी शिराओं के रक्त प्रवाह को पावन करता है। तेल पुरूषार्थ, शक्ति और शौर्य का तेज देता है। संघर्षों से जूझने और आंधी तूफान से मुकाबला करने की ताकत देता है। स्नेह एवं सहकार की सीख देता है। अनवरत अपने लक्ष्य के प्रति चेतनवान बने रहने की मधुर मुस्कान कौर मिठास की साक्षी देता है और जब गृह स्वामिनी इनका थाल सजाकर घर को, बाहर को रोशन करती है तब साक्षात् लक्ष्मी का आह्वान हुआ लगता है तब कौन नासमझी करेगा ऐसे दीपक से वंचित रहने की! मन ठीक ही कहता है-

नन्हा सा दीपक अनन्त किरणों का सूरज है मेरा।
गहन तिमिर में चौराहे पर घर-बाहर डाले डेरा॥

दीवाली पर चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश

– डॉ. महेन्द्र भानावत –

होली और दीवाली, ये दो ऐसे फसली त्यौहार हैं जो हर वर्ग का प्रतिनिधित्व लिये अपने में कई सन्दर्भ-सूत्र पिरोये हैं। जैसे होली के साथ गणगौर त्यौहार जुड़ा हुआ है वैसे ही दीवाली त्यौहार के साथ दशहरा जुड़ा हुआ है। फसल की पकाई पर ये दोनों ही त्यौहार बड़े जोश खरोश के साथ मनाये जाते हैं। होली पर जहां आग, राग, रंग और फाग की प्रधानता देखी जाती है वहां दीवाली पर सब तरफ प्रकाश ही प्रकाश विकीर्ण हुआ दिखाई देता है।

यह दीवाली अकेली नहीं है। इसके ओरूंदोरूं धनतेरस, रूप चवदस, खेंकरा, रामासामा अथवा ल्होड़ी दीवाली जैसे त्यौहार जहां दीवाली को रिद्ध सम्पन्न पुष्ट करते हैं, वहां गृह-लिछमी और पशु-लिछमी के माहात्म्य को भी प्रकटित करते हैं। कितना वैज्ञानिक और लोकमत का व्यवस्थित आलोड़न-विलोड़न है इन त्यौहारों में! वर्षा ऋतु की भिंजाई से सारा जीवन पचपचा हो जाता है। सारा वातावरण संदवाया सा हो जाता है। खाद्यानों कपड़ों-लत्तों तथा गृह-दीवारों पर नानाप्रकार के जीवधारी लग जाते हैं। इसलिए घर के प्रत्येक द्वार, दीवाल, खूंट, आंगन, छज्जे की देखभाल तथा सफाई सुथराई आवश्यक हो जाती है। इसलिए घर लीपे-पुते जाते हैं और देखते ही देखते नानाप्रकार के मांडनें मुलका पड़ते हैं।

धनतेरस को धन-लिछमी का आगमन होता है। घर-घर में। मारवाड़ में ग्रामवधुएं धोरों की धवल रेत अपनी थालियों में भर-भर द्वार के सामने बिछा देती हैं ताकि रात को लिछमीजी जब पदापर्ण करें तो उन्हें कठोर धरती का कष्ट नहीं पहुंचे। वे होले-होले आयें और उनके पावन परस से रेत का प्रत्येक कण स्वर्ण बन जाए। रूप चवदस को सूर्योदय से पूर्व ही महिलाएं सिणगारित हों अपने बड़ों से पुत्रवती होने का आशीष मांगती हैं। इस समय नारियों के कौरकिनारीदार वस्त्रों तथा आभूषणों की छमछमाहट से सारा वातावरण ही छम्मक-छुम्मक हो उठता है। घर की लछमियां तो ये ही हैं। बड़े-बूढ़े इन्हीं बहुओं को आशीर्वाद देकर इन्हीं लिछमियों से साक्षात् लक्ष्मी पाते हैं। बहू ही घर की चानणी है। मंगल मांगल्य है। रिद्धि है, सिद्धि है। रूप और रूपांकन है। रंग और रास है। पुत्र-पुत्री से आंगन कुंवारा नहीं रहने की उम्मीद आश है।

दीपक-स्नेह, यश और अमरता का प्रतीक :

दीवाली आती है घने अंधकार में। इस घने अंधेरे में एक छोटे से दीपक की क्या बिसात ! पर वह जलता है मधुरे-मधुरे और दीप्त-प्रदीप हो उठता है। इस दीपक का जलना किसी को फूंक देना अथवा मटियामेट कर देना नहीं होता। यह तो स्नेह उड़ेलता है और इस स्नेह उड़ेलने के कारण एक से दूसरा और दूसरे से तीसरा ; इस प्रकार यह क्रम चलता रहता है। दीप से दीप जलने का, प्रकाशित होने का। एक परिवार का दीपक समस्त समाज, देश और देशान्तर को दीपित करता है। घना अंधेरा ज्योतिर्मय प्रकाश के रूप में फूट पड़ता है। तब लगता है जैसे धरा का प्रत्येक अंग-प्रत्यंग पीत प्रकाश से केशरिया गया है।

कितना आश उल्लास और उजास है इस त्यौहार में! अंधकार अज्ञान पर प्रकाश! ज्ञान का यह कमल-दीप हमारे समग्र कीचड़-कुकर्म को छेदित करने वाला है। अंधकार मृत्यु से लड़कर अमर जोत पाने का बहुत बड़ा संदेश है। इन दीपों का। ये दीये रात को जलकर प्रात: होते-होते देश के उन शूरवीरों में तेज यश हो जाते हैं जो रात-दिन देश की चौकसी करते तेजस्वी यशस्वी बने रहते हैं।

दीवाली के इन दीपों में जैसे जनसाधारण की मधुर मुस्कुराहट अपनी जगमगाहट और झिलमिलाहट से समस्त वसुधा को आलोकित कर रही हो अथवा गगनदेव ने अत्यंत प्रमुदित होकर धरती पर अपनी मुस्कान बिखेरी हो या लक्ष्मी रानी की साड़ी के बीच जैसे असंख्य सुनहली पक्की कोर की पंखुड़ियां आंखमिचौनी खेल रही हो या कि किसी दानी ने जैसे उजाले के कण बिखेर दिये हों; ऐसे ही कुछ विविध रूपों एवं रंगों में दीवाली के दीप तिल-तिल जलते, लुकछिप करते हमें दृष्टिगोचर होते हैं। कार्तिक के कृष्ण पक्ष में चार-पांच दिन के लिए दीवाली पाहुन बनकर आती है और धरा को सुवासित-सुगंधित एवं प्रकाशित कर हमें अंधकार से प्रकाश की ओर जाने का मार्ग बता जाती है। हर्ष उल्लास एवं अनुपम आनंद लिये बालक-बालिका वर्ग में एक नया जोश उमड़ आता है। दीवाली के स्वागतार्थ एक पक्ष पहले से ही दीवाली के आने की खबर अपनी-अपनी टोलियों में नन्हें-नन्हें हमजोलियों के घर-घर में गीत गा-गाकर हंसते खेलते कूदते एवं नाचते हैं। बालकों में इस प्रकार के गाये जाने वाले गीतों को हरणी अथवा लोड़ी कहते हैं। टोली में सभी साथी स्वर में स्वर मिलाकर जब-

आंबा में तो तूंबोरे खेर्‌या में खजूरा।
लक्कड़दासजी कागज मेल्यो लिंबाड़े हजूर।
सल्ला सायजादी लोड़ी।
आंबो वद्‌यो भाई लाम्बो रे डाल गई गुजरात!
डाले लागी केर्‌यां रे खाईग्यो बदरीनाथ! सल्ला....
बदरीनाथ रा कोट कांगरा रे चित्तौड़्यो कुम्हार
चीतो आयो सांकड़े रे नार धड़ूकाले! सल्ला....

गीत गाते हैं तो लगता है गीतों के बोल स्वयं रसीले-रसिये बनकर छैल-छबीली दीवाली की आरती उतारने को उतारू हो रहे हैं।

मक्की माता गणी पाकी रे घट्‌टी घमोड़ा खाय
पीसना वाली पातली रे नतरा सोठा खाय। सल्ला..
खेताखेड़े वणो वायो रे मनकी नींदवा जाय
म्हारो बेटो ऊंदरो रे दानगी देवा जाय! सल्ला...

कपास बोकर बिल्ली द्वारा नींदना (खेत की सफाई करना) और चूहे द्वारा दानगी (मजदूरी) देने की कितनी सुंदर कल्पना की गई है। बिल्ली और चूहों के इस प्रकार के आपसी स्नेह, सहायता और बंधुता से हमें यही सबक मिलता है कि जब इन पशुओं में भी इतनी घनिष्टता एवं भाईचारे का व्यवहार होता है तो फिर हम सभी मानव कहाने वाले, कंधों से कंधा मिलाकर दीवाली के इस पुनीत यज्ञ में क्यों न हाथ बटायें! ऐसा स्नेह, सौहार्द्र, सहयोग, समरसता और सहिष्णुता का संदेश इसी दीप-पर्व को हाथ लगा है।

हमारे यहां दीपदान करने की परम्परा भी अति प्राचीनकाल से रही है। स्कंद पुराण तथा पद्‌म पुराण में इस माह में घी अथवा तेल के दीपक जलाने वाला अश्वमेघ यज्ञ करने का उल्लेख है। पुराणों में दुर्गम भूमि पर दीपदान करने का विधान भी मिलता है। इसी माह में लड़कियां-महिलाएं काति नहाकर अन्त में जलाशय के किनारे पानी में दीपक छोड़ती हैं। मानव जीवन में विभिन्न संस्कारों पर दीपदान की बड़ी समृद्ध परम्परा आज भी है। विवाह पर तोरण आए दूल्हे की दीपों से अरती उतारी जाती है। मृत व्यक्ति के स्थान पर तेरह दिन तक दीपक जलाकर उसके प्रति श्रद्धा व्यक्त की जाती है।

प्रत्येक देवी-देवता का आह्‌वान भी दीपक जलाकर ही किया जाता है। दीपक जलाकर रात जगाई जाती है। लक्ष्मी का आह्‌वान भी दीपक जलाकर ही किया जाता है। गजदीप नाम से राजस्थान में दीपदान की एक परम्परा रही है। किसी अपिरिचत के पथ को आलोकिक करने के अभिप्राय से आकाशदीप और पंछीदीप प्रज्वलित किया जाता है।

कार्तिक की अमावस्या की दीवाली के दीपों के साथ-साथ व्याघ्र, वृषभ, गरूड़, गुरु तथा वृक्ष दीपदान किया जाता है। इसी माह बलि ने विष्णु का दीपदान किया तो वह सारे कष्टों से मुक्त हो स्वर्ग सिधार गया। मंदिरों में जहां वृक्ष न हो वहां काठ का प्रतीक वृक्ष बनाकर जलाया जाता है। मयूर की आकृति का दीपदान करने की परम्परा कश्मीर में पाई जाती है। उड़ीसा बंगाल की जनजातियों में तो एक-दूसरे के गले मिलते हुए सामूहिक नृत्यावस्था में प्रत्येक घर में दीप देने की परंपरा है। कितना महत्व, कितनी ममता-समता और कितना माहात्म्य है इन दीपों का!!

आदिवासियों तथा काश्तकारों में दीवाली का प्रारंभ खेत-देव खेतरपाल की पूजा से होता है। खेतरपाल के रूप में एक पतरे पर सिन्दूर लगा नींबू काट नारियल की धूप दे दी जाती है। रात को वहां दीपक कर दिया जाता है। चवदस को नमक, मिर्च, राई, फटे पुराने चीथड़े आदि सात प्रकार की चीजों को मिलाकर एक मटकी में डाल दी जाती है। यह मटकी गाजे-बाजे के साथ चौराहे पर छोड़ दी जाती है। विश्वास है कि ऐसा करने से भूत, प्रेत आदि के चक्कर से तो उन्हें मुक्ति मिलती ही है साथ ही वर्ष भर ही समग्र प्रकार की अलाय बलाय से भी वे बचे रहते हैं।

दशरावे से ही लड़कियां दीवाली के स्वागत में रात्रि को प्रत्येक घर-गली में घुड़ला फिराना प्रारंभ कर देती हैं। यह घुड़ला छेदवाली मटकी होती है जो दीपक लिये होती है। इसके चारों ओर के छेदों से भीतर रखे हुए दीये का प्रकाश बड़ा मधुर-मधुर टिमटिमाता हुआ परिलक्षित होता है।

लड़कियां समूह रूप में इस घुड़ले को सिर पर लिये गीतों के साथ नाचती रहती हैं। गृस्वामिनियां इस घुड़ले को तेल पूरती हैं और पैसे देती हैं। यह घुड़ला भी हमारे लोकजीवन का ऐतिहासिक प्रवाद बन गया है।

यह घुड़ला सिंध का मीर था जिसका नाम घुड़ेल खां था। प्रसिद्धि है कि संवत् 1548 में इसने मारवाड़ के पीपाड़ नामक गांव पर हमला कर वहां की बहुत सारी लड़कियों को पकड़ ले गया। तब मल्लूखां नामक अजमेर का सूबेदार था। उसने अपने सैनिकों के साथ घुड़ेलखां पर हमला कर तीरों से उसका सिर छेद डाला और अपहरण की हुई बालिकाओं को मुक्त कर उन्हें घुड़ेलखां का तीरों से छिन्नभिन्न किया सिर भी भेंट किया। यही सिर मटकी के प्रतीक रूप में लड़कियां अपने सिर पर लिये नाचती हैं। घुड़ेलखां का प्रतीक यह घुड़ला असत है और इसमें प्रज्वलित दीप सत है। यह दीपोत्सव असत पर सत की विजय का हास-उल्लास है।

मारवाड़ का यह घुड़ला मेवाड़ में घड़ल्या बन नाचा गाया जाने लगा। यहां घड़ल्या बड़ा लाड़ला बन सबके परिवार में सेंतमेंत हो गया। यहां इसकी कीमत सात सुपारी और एक रूपया है। गीतों में घड़ल्या लड़कियों को उतना ही प्रिय है जितनी प्रिय किसी महिला के लिये सजी सिणगारी पुत्र-वधू होती है।

रमझम करती बण्यारी आई
के वे बण्यारी घड़ल्या को मोल
सात सुपारी रिपियो रोक
दा पड़ै तो ले बाई, नीतर उत्तर दे बाई
थारो बेटो परण पधार्‌यो
लाख रिप्या री लाड़ी लायो
लाड़ी करै सिणगारो, घड़ल्यो मारो लाड़लो।

बालक-बालिकाएं समूह रूप में दीवाली के गीत गाती हुई घर-घर दीवाली का संदेश सुनाती हैं। बालिकाओं द्वारा गाये जाने वाले गीतों को घड़ल्यो नाम से संबोधित करते हैं। इधर मेवाड़ में घड़ल्ये से संबंधित अन्य धारणा और मिथक प्रचलित हैं।

घड़ल्या रे घड़ल्या कठे चाल्यो
चाल्यो ए बाई पीली के खाने
खोदी खोदी नु गुणा में नाकी
लींपी चूंपी ने चाकर चणायो

बालिकाएं प्राय: अपने घरों की सफाई लींपापोती हेतु सुबह बहुत जल्दी अथवा संध्या को भोजन करने के बाद अपने सिर पर टोकरियां ले-लेकर पीली लाने के लिए खानों पर जाती हैं। घड़ल्या नामक कुम्हार का लड़का भी एक दिन जब अपने गधे को साथ लिये पीली लेने जा रहा था तब रास्ते में एक लड़की के पूछने पर उसने बताया कि पीली लाकर अपने घर को स्वच्छ एवं साफ सुथरा बनाऊंगा और दीवाली का त्यौहार मनाऊंगी।

वह घड़ल्या सभी लड़कियों के लिए अजीब खिलौने एवं हंसी मजाक का विषय बन गया। आज तक लड़कियों ने घड़ल्या जैसा अजीब नाम नहीं सुना नहीं था, धीरे-धीरे यही गीत दीवाली के गीतों के साथ लड़कियों ने गाना प्रारंभ कर दिया। शनै:-शनै: दूसरे गीत तो प्राय: लुप्त से होते गये और यह घड़ल्या ही गीत बन कर आज तक सभी के कलकंठों में गूंजता रहा।

लड़कियां गीत गाते समय अपने साथ एक मिट्‌टी की कलशी ले जाती हैं जिसके चारों ओर छोटे-छोटे छिद्र होते हैं और जिसमें एक नन्हा सा दीपक जलता रहता है। इसी को घड़ल्या कहा जाता है। घड़ल्ये का मोल पूछने पर लड़कियां उत्तर देती हैं-

रमझम करती बण्यारी आई
के वे बण्यारी घड़ल्या को मोल
सात सुपारी रूपयो रोक
दाव पड़े तो दे बाई नीतर उत्तर दे बाई
थारो बेटो परण पधार्‌यो
लाख रीपा की लाड़ी लायो
लाड़ी करे सिणगारो घड़ल्यो म्हारो लाड़लो।

एक अन्य गीत में लड़कियां अपने पिता से 'बड़े घर परणावो जी' कह कर अपनी आंतरिक मनोभावना जिस खूबी से व्यक्त करती है, वह सुनते ही बनती है-

गाड़ा नीचे चमला बाया, ऊगा छोटा-मोटा जी
बाप म्हारा बावजी बड़े घर परणावोजी
बड़ा घरां का ताकड़ी तोला, सेर सोनो तोलांजी
सेर सोना की म्हारे आयल-पायल रूपा का झांझरियाजी
ओढ़ पेर ने पाणी चालां, राणाजी बखाणेजी।
रावजी रा घुड़ल्या छूटा, ठमके पायल टूटीजी
लादी व्है तो दीजो देवर, म्हूं थाणी भोजाईजी!
लोड़्यो देवर पीसे पोवे, जेठ भरेगा पाणीजी,

बड़े घर में ब्याहने पर सोने के समस्त आभूषणों से सारा शरीर ही जैसे सोना बन जाएगा। अच्छे ओढ़ पहिन कर जब पानी लेने पनघट पर जाऊंगी तो राणाजी मुझे बखानेंगे। खेलकूद में जब मेरी पायल टूट जायेगी तो देवरजी से पायल ढूंढ लाने को कहूंगी। छोटा देवर पीसने-पोने में मेरी मदद करेगा। जेठजी कभी-कभी पानी की मटकी भर ले आयेंगे। नन्हीं-नन्हीं बालिकाओं की इस प्रकार की सुखी पारिवारिक जीवन की कल्पना कितनी स्वाभाविक एवं सराहनीय है।

छोटी-छोटी लड़कियां अपनी कल्पनाशक्ति से न जाने कैसे-कैसे कहानी-किस्से बना लेती हैं, इसकी हम कल्पना तक नहीं कर सकते। उनकी सृजन-क्षमता का कोई आंक नहीं लगा पाया। घड़ल्ये से जुड़ा एक दास्तान बड़ा ही मनोरंजक है।

एक दीवाली जबकि लड़कियां घड़ल्या गा रही थी, एक जरा से आपसी वैमनस्य के कारण एक अन्य लड़की उसके हाथ से वह घड़ल्या छीनकर भाग गई। रास्ते में उसके पांव में कांटा चुभ गया, बात बढ़ गई। कांटा बुरी तरह दर्द करने लग गया तब ताई के वहां कांटा निकलवाने गई।

देवजी ने संतोष एवं धीरज के साथ उसे पानफूल खाने को दिये। देवजी ने कांटा निकलवाकर जब वह घर जा रही थी तो रास्ते में मगरी का पुत्र जो स्वभाव से ही चंचल था, मिल गया और उसके हाथ से पानफूल छीनकर खा गया। यह शिकायत लेकर जब वह मगरी के पास गई तो मगरी को अत्यंत गुस्सा आया और उसके जोर-जोर से सात लातें लगाईं। मगरी का बेटा बिचारा गुड़िन्दे खाता-खाता अपने होश-हवास ही भूल गया।

– शेष पृष्ठ सात पर

GMCH
GEETANJALI HOSPITAL
HEALTH IS HAPPINESS

गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल

की ओर से आप सभी को

HEALTH IS HAPPINESS

+91 294-2500044 EMERGENCY : +91 80030 98718

एकलिंगपुरा चौराहा के पास, उदयपुर (राज.)

शब्द रंजन
उदयपुर, शुक्रवार 01 नवंबर 2024

सम्पादकीय

दीवाली अकेली नहीं

होली और दीवाली, दो मुख्य त्यौहारों में दीवाली ही ऐसा त्यौहार है जिसके साथ चार और त्यौहार जुड़े हुए हैं। ईवाली इन के केन्द्र में है। इससे पूर्व धनतेरस फिर रूप चवदस और बाद में गोरधन पूजा और फिर भाईदूज आते हैं। गोरधन पूजा सुबह होती है और गांवों में संध्या को पशु पूजा होती है। दिनभर पशुओं का सिणगार किया जाकर शाम को सारे सारे पशु एक जगह इकट्ठे होते हैं और उनकी दौड़ आयोजित कर साल भर के शकुन लिये जाते हैं।

दीवाली के दूसरे दिन खेंकरे पर प्रातः रात रहते-रहते औरतें अपने घर का कचरा थाली में ले बाहर डालने जाती हैं और आते वक्त 'दरीदर-दरीदर सगलो जाजो, म्हाणै घर में लिछमी आजो' कहते हुए चाबी से थाली बजाती हुई लौटती हैं साथ ही एक दीपक चौराहे पर और एक-एक दीपक पड़ोसियों के घर 'परस्या पाहुना' को सूचना देती हुई छोड़ आती हैं। 'परस्या पाहुना' भगवान पुरुषोत्तम के शुभागमन का संकेत है।

पल्ले की ओट में थाली द्वारा घर-घर छोड़ा यह दीपक प्रत्येक घर के ज्योतिर्मय जीवन की मंगल कामना का सूचक है। प्रेम, सुख, मंगल और पारिवारिकता का कितना ऊंचा भाव छिपा है इन दीपों में! इस दीवाली त्यौहार में! व्यक्ति इस दिन स्वयं अपना ही घर-परिवार प्रकाशित हुआ नहीं देखना चाहता अपितु चाहता है कि प्रत्येक घर-परिवार और यह अग-जग इस ज्योति से ज्योतित हो। व्यष्टि में समष्टि की कितनी उदात्त भावना छिपि है, वसुधैव कुटुम्बकम् के विस्तार को नापने वाले इस त्यौहार में!!

इसी दिन प्रातः गोबर के गोरधनजी बनाकर घर की देहरी पर पूजे जाते हैं। ये गोरधनजी जहां भूत-प्रेत के प्रतीक माने जाते हैं वहां खेतीहर भूमि के भी विश्वास हैं। गायों के भड़क जाने से खेत के फलै में सोये गोरधनजी गचर दिये गये तो उनकी स्मृति उनकी पूजा के रूप में स्थाईत्व ग्रहण कर गई। इन गोरधनजी की पूजा की जाती है और ल्होड़ी दीवाली तक ये देहरी के वहीं पड़े रहते हैं। संध्या-रात्रि को किसान धन-लिछमी के प्रतीक चौपायों को मेंहदी से सिणगारते हैं। उनके सींगों को भांति-भांति के रंग से रंगते हैं। उनके गलों में घूघरे तथा मोरपंख के बेड़े-छेड़े बांधते हैं। खासतौर से बैलों को एकत्रित कर लपसी, चावल, नारेल की धूप दी जाती है और हीड़ दीपों से उनकी आरती उतारी जाती है।

किसान इस मौके पर उनके धोक लगते हैं और उनकी यशगाथा हीड़ गाने को मचल पड़ते हैं। चौपे में इस दिन गायें खेंकरे खेलाई जाती हैं। भीलों में किसी सत्चरित्र भील की असामयिक मृत्यु हो जाने के कारण पत्थर पर उसकी प्रतिमा उत्कीर्ण कर 'गाता' के रूप में पूजन भी इसी दिन किया जाता है। नाथद्वारे के श्रीनाथजी मन्दिर का प्रख्यात अन्नकूट उत्सव भी एक महत्वपूर्ण प्रसंग है जो भीलों के ही लूटने का पारम्परिक पट्टा कहा जा सकता है।

फिर से मन के दीप जलाओ

वेदव्यास

फिर से मन के दीप जलाओ
विश्ववासों के शब्द जगाओ।
छोटे-छोटे अंधियारों में
खुशियों के संसार सजाओ।।
जीवन के सूने आंगन में
स्मृतियों की जोत जलाओ।
बहुत समय हलचल में बीता
अब कुछ देर सहज हो जाओ।।
बीता समय नहीं आता है
सपनों के सुरताल बजाओ।
सुबह शाम के सन्नाटों में
आशा का उन्माद जगाओ।।
सब कुछ भीतर छिपा हुआ है
मत बांधों कुछ बाहर आओ।
सांसों के इस शीशमहल में
हंसो-हंसाओ झूमो गाओ।।
फिर से मन के दीप जलाओ
रचना के संसार सजाओ।
दुख के सपनों को बिसराओ
सुख का समय बधाई गाओ।।

पाँच को धींग पुरस्कार, दो को जैन दिवाकर पदक

उदयपुर (ह. सं.)। राजस्थान साहित्य अकादमी एवं युगधारा के संयुक्त तत्वावधान में दो वर्ष का धींग पुरस्कार समारोह हुआ। इसमें जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कर्नल शिवसिंह सारंगदेवोत एवं राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के पूर्व अध्यक्ष डॉ. देव कोठारी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। युगधारा अध्यक्ष किरणबाला 'किरण' ने अध्यक्षता की। अकादमी सचिव डॉ बसंतसिंह सोलंकी का विशिष्ट आतिथ्य रहा।

कन्हैयालाल धींग राजस्थानी पुरस्कार तरुण दाधीच एवं श्रेणीदान चारण व उनकी पत्नी विजयलक्ष्मी देथा को संयुक्त रूप से प्रदान किया गया। नवलेखन हेतु उमरावदेवी धींग साहित्योदय पुरस्कार अलंकार आच्छा (चेन्नई) एवं डॉ. रेखा खराड़ी (डूंगरपुर) को प्रदान किया गया। नंदू राजस्थानी को भवदत्त महता पुरस्कार दिया गया। सभी साहित्यकारों को स्मृति चिह्न, प्रशस्ति पत्र, शॉल, मुक्ताहार, मेवाड़ी पाग, जपमाला, कलम, सम्मान राशि और डॉ. दिलीप धींग का साहित्य प्रदान कर सम्मानित किया गया। बंबोरा की अव्वल छात्रा मूमल चौहान और छात्र वत्सल जारोली को श्राविकारत्न उमरावदेवी धींग की स्मृति में जैन दिवाकर रजत पदक से सम्मानित किया गया। प्रणत धींग ने डॉ. दिलीप धींग द्वारा रचित माता-पिता विषयक कविता की प्रस्तुति दी। युगधारा द्वारा प्रणत का अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर युगधारा संस्थापक डॉ. ज्योतिपुंज, महासचिव डॉ. सिम्मीसिंह, सचिव दीपा पंत 'शीतल', उपाध्यक्ष प्रकाश तातेड़, सुनिता सिंह, डॉ. आशीष सिसोदिया सहित बड़ी संख्या में साहित्यकार एवं साहित्यप्रेमी उपस्थित थे। रोड़ीलाल धींग, आशा दाणी, सुरेशचंद्र धींग, डॉ. मदन कोठारी, एडवोकेट अतुलशाह धींग ने अतिथियों का सत्कार किया। अशोक जैन 'मंथन' ने संचालन किया। डॉ. निर्मल गर्ग ने धन्यवाद दिया।

मुळकते मांडणों में लक्ष्मीजी का आगमन

-डॉ. कहानी भानावत-

दीवाली दीयों का त्यौहार है। इस दिन असंख्य दीपक धरती को रोशन करते हैं। अमावस्या की रात्रि प्रकाश से ऐसी जगमग हो उठती है जैसे आकाश असंख्य तारों से झिलमिलाता रहा है। दीवाली से पूर्व घर आंगन को कलात्मक रूप-सौंदर्य प्रदान करने वाले माण्डणें प्रकाश से मिल दीवाली को सद्गुणी बना देते हैं। घर-आंगन से लेकर देहरी-दीवाल तथा चौपाल और घर के प्रत्येक कोने में गेरु भूमि पर खड़िया मिट्टी से तरह-तरह के माण्डणें ऐसे खिलखिलाते दृष्टिगोचर होते हैं जैसे नीली झील में श्वेत कमल टिमटिमा रहे हैं।

ये माण्डणें ऋद्धि-सिद्धि, स्वच्छता, सुन्दरता, सुख-समृद्धि तथा मंगल एवं सौभाग्य के प्रतीक कहे जाते हैं। इनमें बिन्दु, रेखाएं, कोण, वनस्पति और पक्षी जगत का भरा-पूरा परिवार समाहित होता है जो सृष्टि की समग्रता का द्योतक कहा जाता है। इनमें विशेष तौर से सौलह दीपक, चौक, पगल्ये, फूल, चौपड़, पान, फीणी, गलीचा, स्वस्तिक, जलेबी, गमला, दरवाजे के दोनों तरफ की दीवाल को सजाते कुंवल्ये, हीड़, बीजणी, कलश, जार, सुआ, मोर-मोरनी, गाय के खुर जैसे अनेक अंकन दीवाली के साक्षी होकर अगजग को खुशहाल बनाते हैं।

ये माण्डणें ज्ञान-विज्ञान, तन्त्र-मन्त्र, लोक-परलोक तथा चर-अचर सबको अपने में आत्मसात कर अंधकार पर प्रकाश, असत्य पर सत्य और मृत्यु पर अमरत्व की स्थापना के संवाहक होते हैं। धरती पर जो कुछ अभिमण्डित और मण्डनीय है वह सब माण्डणों में मण्डित कर महिलाएं लक्ष्मी, सरस्वती और उन सारे देवी-देवताओं का सान्निध्य प्राप्त करती हैं जो मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के सहभागी बनते हैं।

महालक्ष्मी को भोग लगने वाले चावल के मरको से महक रहा मिठाई बाजार

- मुकेश मूंदड़ा -

दीपावली पर्व पर लक्ष्मी पूजन में भेंट करने के साथ ही चित्तौड़गढ़ की प्रमुख मिठाई चावल से बनने वाले मरके तैयार करने के लिये मिठाई बाजार सहित अन्य मिठाई व्यवसायियों द्वारा माल तैयार किया जा रहा है। जिस प्रकार जोधपुर की कचौड़ी अपने स्वाद की देशभर में खास पहचान रखती है, ठीक उसी प्रकार चित्तौड़गढ़ के मरके की महक अब महाराष्ट्र और गुजरात तक जा पहुंची है।

दीपावली पर इस मिठाई का धार्मिक दृष्टि से भी खासा महत्व है, क्योंकि धनतेरस पर चावल से मां लक्ष्मी की पूजा की जाती है वहीं, चित्तौड़गढ़ में मरके के रूप में चावल की मिठाई बनाने की परंपरा है, जो पिछले 100 सालों से चली आ रही है। दीपावली पर इस मिठाई की विशेष मांग रहती है। यह मिठाई पूरी तरह से चावल से बनी होती है। लिहाजा इस मिठाई से ही मां लक्ष्मी की पूजा होने लगी, जो आज एक परंपरा का रूप धारण कर चुकी है।

चित्तौड़गढ़ के गांधी चौक के निकट स्थित मिठाई बाजार में पिछले एक महीने से मरके की महक वहां से गुजरने वालों को मोह रही है। भारी मात्रा में बाहरी ऑर्डर मिलने से दुकानदार रात-दिन मिठाई बनाने में जुटे रहे। 100 साल पहले शहर में किसी ने चावल की जगह मिठाई के रूप में मरके से मां लक्ष्मी की पूजा की थी, जो धीरे-धीरे यहां की परंपरा बन गई। यहां दो दर्जन से अधिक दुकानों पर दीपावली से पहले ही मरका बनाने का काम शुरू हो जाता है। इसे बनाने में केवल चावल, शक्कर और घी का इस्तेमाल होता है। रात को चावल के आटे को पानी में डाल दिया जाता है और उसे अगले दिन देसी घी में टिकिया बनाकर फ्राई किया जाता है। इसके उपरांत उसे शक्कर की चासनी में डालकर मरका तैयार किया जाता है। इसमें मिलावट की भी आशंका नहीं रहती है। यही कारण है कि यहां दीपावली पर मां लक्ष्मी को भोग लगाने के लिए लोग मिठाई के रूप में मरके को अधिक पसंद करते हैं। आज इसकी मुंबई, सूरत, रतलाम, मंदसौर, उज्जैन, भीलवाड़ा और उदयपुर में भारी मात्रा में सप्लाई होती है।

ARCHI
Group of Builders
शुभ दीपावली
उदयपुर
ARCHI
PEARL PARADISE
3 & 4 BHK Luxury Apartment
MEERA NAGAR, SHOBHAGPURA, UDAIPUR
RERA Number : RAJ/P/2020/1233
POSSESSION SOON
ARCHI
THE HARMONY
3 & 4 BHK Luxury Apartment
OPP. COFFEE CULTURE,
SHOBHAGPURA, UDAIPUR
RERA Number : RAJ/P/2021/1500
POSSESSION SOON
ARCHI
THE ADDRESS
4 & 5 BHK Luxury Apartment
DPS ROAD, SHOBHAGPURA, UDAIPUR
RERA Number : RAJ/P/2023/2861
NEW LAUNCH
CORPORATE ADDRESS
Ground Floor, Archi Arihant Building, 100 ft. Road
Shobhagpura, Udaipur, Rajasthan - 313001.
www.archigroup.in
info@archigroup.in
archigroup_udaipur
7733-883-883
PARSHVA KALLA
@9414165391

बाजार / समाचार

जिंक फुटबॉल अकादमी के कैफ और प्रेम का भारतीय टीम में चयन

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के लिए फुटबॉल प्रतिभाओं को निखारने में सबसे आगे रही हिंदुस्तान जिंक की जिंक फुटबॉल अकादमी ने एक बार फिर बड़ी उपलब्धि हासिल की है। डिफेंडर मोहम्मद कैफ ने थाइलैंड में एएफसी अंडर-17 एशियाई कप क्वालीफायर में लगातार दो शानदार प्रदर्शन करते हुए टीम की क्लीन शीट बरकरार रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, बल्कि ब्रुनेई के खिलाफ भारत के शुरुआती मैच में शानदार गोल भी किया। मोहम्मद कैफ 2018 से जिंक फुटबॉल अकादमी के साथ जुड़े और देश के लिए अपना तीसरा अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंट खेल रहे हैं। स्ट्राइकर प्रेम हंसदक ने हैमस्ट्रिंग की गंभीर चोट से उबरने के बाद भारतीय टीम में जोरदार वापसी की है।

वेदांता जिंक फुटबॉल एंड स्पोर्ट्स फाउंडेशन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी आकाश नरूला ने कहा कि कैफ पहले ही राष्ट्रीय नायक बन चुके हैं, जिन्होंने सैफ कप में भारत की जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हम प्रेम हंसदक को राष्ट्रीय जर्सी में वापस देखकर उत्साहित हैं। हमारा एकमात्र ध्यान राजस्थान और भारतीय फुटबॉल दोनों पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए जमीनी स्तर और युवा स्तर पर ऐसी युवा प्रतिभाओं को विकसित करने पर केंद्रित है।

टू-व्हीलर लोन एलिजिबिलिटी वाउचर लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। श्रीराम समूह की प्रमुख कंपनी श्रीराम फाइनेंस लि. ने 'टू-व्हीलर लोन पात्रता वाउचर' लॉन्च करने की घोषणा की, जो इस त्योहारी सीजन में अपने सपनों का टू-व्हीलर खरीदने के इच्छुक ग्राहकों के लिए एक अभिनव और अपनी तरह का पहला टू-व्हीलर लोन समाधान है। श्रीराम फाइनेंस के एमडी व सीईओ वाई एस चक्रवर्ती ने कहा कि हमें टू-व्हीलर लोन एलिजिबिलिटी वाउचर पेश करते हुए गर्व हो रहा है, जो इस त्यौहारी सीजन में अपने टू-व्हीलर खरीदने का इरादा रखने वाले सभी ग्राहकों के लिए अपनी तरह की पहली पहल है। श्रीराम फाइनेंस राजस्थान में सबसे बड़े टू-व्हीलर फाइनेंसरों में से एक है और यह पहल राजस्थान में हमारी स्थिति को मजबूत करने और बढ़ाने में मदद करेगी। ग्राहक आमतौर पर अपनी पसंद की बाइक खरीदने के लिए रिसर्च करने और उस पर निर्णय लेने में काफी समय लगाते हैं। हालांकि, वे अक्सर फाइनेंसिंग पहलू को नजरअंदाज कर देते हैं, जिससे लोन प्रदाता चुनने में अनिश्चितता पैदा होती है। बहुत से लोग इस बात से अनजान हैं कि वे अपनी पसंद के टू-व्हीलर के लिए अपनी लोन पात्रता निर्धारित कर सकते हैं। टू-व्हीलर लोन एलिजिबिलिटी वाउचर के जरिए ग्राहक आसानी से अपनी लोन पात्रता की जांच कर सकते हैं। टू-व्हीलर लोन एलिजिबिलिटी वाउचर को ग्राहक को टू-व्हीलर लोन के लिए उनकी पात्रता, पात्रता राशि, ब्याज दर और तत्पश्चात लोन की अवधि जानने में लगने वाले समय को कम करने के इरादे से बनाया गया है।

फ्लिपकार्ट द्वारा कार्यशाला आयोजित

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के घरेलू ईकॉमर्स मार्केटप्लेस फ्लिपकार्ट ने उत्तरप्रदेश सरकार के एक जिला-एक उत्पाद (ओडीओपी) विभाग के साथ मिलकर ओरिएंटेशन वर्कशॉप का आयोजन किया। स्थानीय कारीगरों एवं शिल्पकारों को सशक्त करने और ऑनलाइन कारोबार के विकास को गति देने के लिए फ्लिपकार्ट मार्केटप्लेस की संभावनाओं का लाभ उठाने में सक्षम बनाने के उद्देश्य से इस कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के दौरान ओडीओपी विभाग के अधिकारियों और फ्लिपकार्ट के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

फ्लिपकार्ट ग्रुप के चीफ कॉरपोरेट अफेयर्स ऑफिसर रजनीश कुमार ने कहा कि देशभर के कारीगरों, एमएसएमई, एसएचजी, महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यमों और शिल्पकारों को सशक्त करते हुए सामाजिक-आर्थिक विकास को गति देने के लिए फ्लिपकार्ट प्रतिबद्ध है। फ्लिपकार्ट समर्थ जैसी पहल के माध्यम से हमारा लक्ष्य इन समुदायों को डिजिटल इकोनॉमी में आगे बढ़ने के लिए जरूरी टूल्स, संसाधन और राष्ट्रीय बाजार तक पहुंच प्रदान करना है। ई-कॉमर्स को अपनाने और उद्यमिता की क्षमता के मामले में एक हब के रूप में उत्तर प्रदेश महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

'एचडीएफसी टेक इनोवेटर्स 2024' के विजेताओं की घोषणा

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक समूह ने 'एचडीएफसी टेक इनोवेटर्स-2024' के विजेताओं की घोषणा की है। एचडीएफसी टेक इनोवेटर्स-2024 एचडीएफसी बैंक समूह की कंपनियों- एचडीएफसी एएमसी, एचडीएफसी एर्गो, एचडीबी फाइनेंशियल सर्विसेज, एचडीएफसी लाइफ और एचडीएफसी सिक्योरिटीज की एक संयुक्त पहल है और प्रौद्योगिकी से संबंधित स्टार्ट-अप उपक्रमों के लिए नवाचारों और अवसरों को बढ़ावा देने के लिए एचडीएफसी कैपिटल और एचडीएफसी बैंक द्वारा इसका नेतृत्व किया गया है। समूह की प्रत्येक कंपनी के पास स्टार्ट-अप के साथ काम करने की विरासत है जो दोनों संगठनों के लिए फायदेमंद रही है। एचडीएफसी टेक इनोवेटर्स, स्टार्ट-अप इकोसिस्टम के साथ जुड़ाव बढ़ाने और व्यापार करने, प्लेटफॉर्म साझा करने, वित्तपोषण और निवेश प्रदान करने, सह-शिक्षण और उत्पादों और पेशकशों के सह-निर्माण की सुविधा प्रदान करने के लिए एचडीएफसी कैपिटल द्वारा वर्षों से बनाए गए प्लेटफॉर्म के लिए लाभदायक है। यह पहली बार है कि कार्यक्रम को प्रॉपटेक, फिनटेक, सस्टेनेबिलिटी टेक, कंज्यूमर टेक और न्यू एज टेक को कवर करने वाले सेगमेंट में समूह स्तर पर आयोजित किया जा रहा है।

एचडीएफसी टेक इनोवेटर्स 2024 के लिए, पांच श्रेणियों के लिए 2,000 से अधिक आवेदन प्राप्त हुए। शीर्ष 10 विजेताओं का चयन एचडीएफसी बैंक समूह के नेतृत्व, उद्यम पूंजीपतियों, वरिष्ठ उद्योग अधिकारियों और यूनिकॉर्न संस्थापकों से युक्त एक भव्य जूरी द्वारा किया गया। स्क्रीनिंग प्रक्रिया का प्रबंधन ईवाई द्वारा किया गया था। ऑल्ट डॉक्स प्रा.लि., गरुडालिटिक्स प्रा. लि., इंकर्स टेक्नोलॉजी प्रा.लि., इशित्वा रोबोटिक सिस्टम, नोश रोबोटिक्स, न्यूस्पेस रिसर्च एंड टेक्नोलॉजीज, वनस्टैक सॉल्यूशन, क्यूनु लैब्स, रिपोज एनर्जी इंडिया और वीएसओएल4यू टेक्नोलॉजीज प्रा. लि. (येलोस्काई) विजेता थे।

आशा महिला दुग्ध उत्पादक संघ को डेरी नवाचार पुरस्कार

उदयपुर (ह. सं.)। आशा महिला दुग्ध उत्पादक संघ ने पेरिस में अंतर्राष्ट्रीय डेरी फेडरेशन का प्रतिष्ठित 'डेरी नवाचार पुरस्कार' प्राप्त किया। यह पुरस्कार उन्हें दूध के संधारणीय प्रसंस्करण की पहल के लिए प्रदान किया गया। एनडीडीबी और एनडीडीबी डेरी सर्विसेज के चेयरमैन डॉ. मीनेश शाह ने कहा कि महिला नेतृत्व वाले संगठन द्वारा यह प्रतिष्ठित पुरस्कार जीतना गर्व का विषय है। न केवल यह भारत के 'विश्व की डेरी' बनने के मिशन के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि महिलाओं को सशक्त करने की केंद्र सरकार की प्रतिबद्धता को भी मजबूत करता है।

उन्होंने कहा कि आशा एमपीओ का अनौखा चिलर अद्वितीय थर्मोडायनामिक डिजाइन के कारण 250 लीटर/ प्रति घंटे की दर से दूध को ठंडा करता है, जो ऊर्जा की न्यूनतम खपत में ऊष्मा का अधिकतम अंतरण (ट्रांसफर) करता है। यह नवाचार इसप्रक्रिया से निकले गर्म पानी को खाद्य सुरक्षा नियमों के अनुसार सफाई के लिए इस्तेमाल कर भूमिगत जल को बचाने के साथ-साथ स्वच्छता और सुरक्षामानकों को भी प्रोत्साहित करता है। इसमें बिजली छत पर लगे सौर ऊर्जा पैनलों से ली जाती है। दुग्ध गुणवत्ता सुनिश्चित करने के साथ-साथ यह अक्षय ऊर्जा के उपयोग और ऊर्जा के परंपरागत स्त्रोतों पर निर्भरता कम कर संधारणीय अभ्यासों को भी प्रोत्साहित कर जलवायु परिवर्तन पहलों के प्रति भारत की प्रतिबद्धता में भी योगदान करता है। आशा महिला दुग्ध उत्पादक संघ की चेयरपर्सन श्रीमती नरसा कुंवर ने बताया कि आशा महिला एमपीओ की स्थापना 2016 में की गई थी। इसकी 40,000 से अधिक महिला डेरी किसान मिलकर राजस्थान के 9 जिलों के लगभग 900 गांवों से प्रतिदिन एक लाख लीटर से भी ज्यादा दूध का योगदान करती हैं।

अमेज़न इंडिया द्वारा अमेज़न संभव हैकथॉन 2024 लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। अमेज़न इंडिया ने अमेज़न संभव हैकथॉन 2024 के लॉन्च की घोषणा की, जो ई-कॉमर्स में भारतीय लघु और मध्यम व्यवसायों (एसएमबी) के लिए अगली पीढ़ी की टेक्नोलॉजी और एआई-संचालित इनोवेशन को आगे बढ़ाने से जुड़ी राष्ट्रव्यापी प्रतियोगिता है। यह हैकथॉन भारत में कंपनी के प्रमुख वार्षिक शिखर सम्मेलन के पांचवें संस्करण, अमेज़न संभव 2024 की तैयारी का हिस्सा है, और देशभर के इनोवेटर को भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था के विकास में योगदान देने के लिए आमंत्रित कर रहा है। अमेज़न ने स्टार्टअप इंडिया, डीपीआईआईटी, नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन (एनआईएफ) - इंडिया और एनआईएफ इनक्यूबेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप काउंसिल (एनआईफाइनट्रेक) के साथ भागीदारी की है, ताकि देश के दूर-दराज़ के इलाके के इनोवेटर में मौजूद अपार संभावनाओं का समर्थन किया जा सके। यह हैकथॉन 18 वर्ष से अधिक आयु के सभी भारतीय नागरिकों के लिए खुला है, जिसमें छात्र, उद्यमी, जमीनी स्तर के इनोवेटर, सेवा प्रदाता, कामकाजी पेशेवर, एसएमबी और व्यापक ई-कॉमर्स परितंत्र शामिल हैं। यह हैकथॉन ई-कॉमर्स इकोसिस्टम में प्रमुख चुनौतियों का समाधान करने के लिए भारत की इनोवेटिव भावना का उपयोग करने का प्रयास करता है। चाहे आप गेम-चेंजिंग आइडिया वाले कॉलेज के छात्र हों, छोटे शहर से काम करने वाले टेक्नोलॉजी प्रेमी या स्थानीय व्यावसायिक चुनौतियों की प्रत्यक्ष समझ रखने वाले उद्यमी, यह हैकथॉन आपको ई-कॉमर्स परिदृश्य में सार्थक बदलाव लाने का अवसर प्रदान करता है।

हैकथॉन उन इनोवेशन पर ध्यान केंद्रित करेगा जो तेज़ी से विकसित हो रहे डिजिटल परिदृश्य में एसएमबी की वृद्धि और सफलता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकते हैं। प्रतिभागी उत्पाद लिस्टिंग के लिए सोशल मीडिया का लाभ उठाने, मल्टी-चैनल पूर्ति को सुव्यवस्थित करने, सीमा पार व्यापार को सरल बनाने और ई-कॉमर्स के लिए स्थायी समाधान विकसित करने जैसी चुनौतियों का सामना करेंगे।

एचडीएफसी बैंक का दूसरी तिमाही में मुनाफा 5 प्रतिशत बढ़ा

उदयपुर (ह. सं.)। देश के सबसे बड़े प्राइवेट बैंक एचडीएफसी का जुलाई- सितंबर तिमाही में स्टैंडअलोन नेट प्रॉफिट यानी शुद्ध-मुनाफा सालाना आधार पर 5 प्रतिशत बढ़कर 16821 करोड़ रुपये रहा। पिछले साल की समान तिमाही में ये, 15,976 करोड़ रुपये रहा था, हालांकि तिमाही आधार पर बैंक का नेट प्रॉफिट 4 प्रतिशत बढ़ा है।

पिछली तिमाही में बैंक का मुनाफा 16174 करोड़ रुपए रहा था। बैंक के निदेशक मंडल ने मुंबई में आयोजित बैठक में वित्तीय कार्य परिणामों को स्वीकृति प्रदान की।

जुलाई-सितंबर तिमाही में बैंक की कुल आय सालाना आधार पर 9.04 प्रतिशत बढ़कर 85,499 करोड़ रुपए रही, जो पिछले साल की समान तिमाही में 78,406 करोड़ रुपए रही थी। वहीं तिमाही आधार पर बैंक की इनकम 2.4 प्रतिशत बढ़ी है। पहली तिमाही में यह 83,707 करोड़ रुपए रही थी। एचडीएफसी बैंक का मार्केट कैप 2.83 लाख करोड़ रुपए हो गया है। बीते छह महीने में बैंक के शेयर ने अपने निवेशकों को 10 प्रतिशत रिटर्न दिया है। एचडीएफसी बैंक, बैंकिंग और फाइनेंशियल सर्विसेज प्रोवाइड करता है। 30 सितम्बर 2024 के वितरण नेटवर्क के तहत 9092 शाखाएँ एवं 20993 एटीम्स देश के 4088 शहरों/कस्बों में स्थापित थी। इसके अलावा बैंक के पास 15217 बिज़नेस कोरस्पोंडेंट है । 30 सितम्बर 2024 को कर्मचारियों की संख्या 206758 थी।

डिजिटल अरेस्ट के खिलाफ जागरूक किया

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के सबसे बड़े निजी क्षेत्र के बैंक एचडीएफसी बैंक ने ग्राहकों को डिजिटल अरेस्ट फ्रॉड के प्रति सतर्क रहने की सलाह जारी की है, जिसका उद्देश्य इस तरह की धोखाधड़ी के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। डिजिटल अरेस्ट फ्रॉड में, धोखेबाज कानून प्रवर्तन या सरकारी अधिकारियों के रूप में खुद को पेश करते हुए व्यक्तियों या व्यवसायों को निशाना बनाते हैं। पीड़ितों को कथित कर चोरी, विनियामक उल्लंघन या वित्तीय कदाचार के लिए डिजिटल गिरफ्तारी वारंट की धमकी दी जाती है। धोखेबाज डिजिटल अरेस्ट वारंट को वापस लेने के लिए 'निपटान शुल्क' या 'जुर्माना' के रूप में भुगतान मांगते हैं। भुगतान हो जाने के बाद, धोखेबाज अपनी पहचान का कोई निशान छोड़े बिना गायब हो जाते हैं। धोखेबाजों के साथ साझा की गई व्यक्तिगत जानकारी के कारण पीड़ितों को आर्थिक नुकसान और कभी-कभी पहचान की चोरी का सामना करना पड़ता है।

एचडीएफसी बैंक के वरिष्ठ कार्यकारी उपाध्यक्ष - क्रेडिट इंटेलिजेंस एंड कंट्रोल मनीष अग्रवाल ने इस धोखाधड़ी पर चेतावनी देते हुए कहा कि धोखाधड़ी करने वाले सीधे ग्राहकों की भावनाओं को निशाना बना रहे हैं। जब भी किसी को कानून प्रवर्तन अधिकारी होने का दावा करने वाले धोखेबाजों से कॉल या संदेश प्राप्त होता है, तो हमेशा उचित चैनल के माध्यम से सरकार / कानून प्रवर्तन अधिकारियों से स्वतंत्र रूप से संपर्क करके उनकी पहचान की पुष्टि करें। सतर्क रहना और इस तरह की धोखाधड़ी की प्रथाओं के बारे में जागरूक रहना ऐसे घोटालों का शिकार होने से बचने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

स्तन कैंसर पर जागरूकता कार्यक्रम

उदयपुर (ह. सं.)। गीतांजली हॉस्पिटल में स्तन कैंसर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि निवृत्तिकुमारी मेवाड़ थीं। कार्यक्रम का नेतृत्व गीतांजली हॉस्पिटल के सीओओ ऋषि कपूर, डीजीएम मार्केटिंग कल्पेशचन्द रजबार और श्रीमती दीपमाला मेवाड़ा ने किया। कार्यक्रम में उदयपुर की 500 विभिन्न ग्रुप्स की महिलाओं ने भाग लिया।

निवृत्तिकुमारी मेवाड़ ने कहा कि महिलाओं को नियमित रूप से स्तनों का स्वयं परीक्षण करना बेहद आवश्यक है। यह कदम स्तन कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से लड़ने के लिए समय पर इलाज सुनिश्चित कर सकता है। ऋषि कपूर ने बताया कि भारत में स्तन कैंसर एक प्रमुख स्वास्थ्य चुनौती है और इसके प्रति जागरूकता बढ़ाना अत्यंत जरूरी है। गीतांजली हॉस्पिटल भी इस दिशा में समाज में निरंतर योगदान दे रहा है।

कार्यक्रम के दौरान, गीतांजली हॉस्पिटल की वरिष्ठ विशेषज्ञ डॉ. रेणु मिश्रा, डॉ. पूजा गांधी, डॉ. सुमन परिहार, डॉ. कल्पना गुप्ता, डॉ. सुषमा मोगरी, डॉ. भामिनी जाखेटिया और डॉ. शब्दिका कुलश्रेष्ठ द्वारा पैनल चर्चा आयोजित की गई जिसमें स्तन कैंसर के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत से विचार-विमर्श हुआ। इस दौरान स्तन कैंसर जागरूकता पर नाटक मंचन किया गया।

कम्पाउंडर कंठालिया नहीं रहे

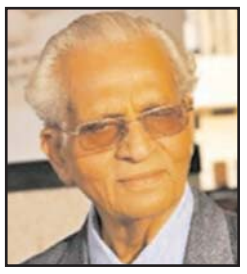

उदयपुर (ह. सं.)। कम्पाउंडर रोशनलाल कंठालिया (86) का 19 अक्टूबर को निधन हो गया। वे मूलत: कानोड़ के रहने वाले थे। डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि रोशनजी और मैं आठवीं तक कानोड़ के जवाहर विद्यापीठ में सहपाठी रहे। वे रिश्ते में भानजे ही थे और मात्र सात दिन छोटे थे। दसवीं पास कर कानोड़ से पांच छात्र इन्दौर कम्पाउंडर की ट्रेनिंग के लिए गए। उनमें से एक रोशनजी भी थे।

उदयपुर में वे टीबी हॉस्पिटल बड़ी के अधीक्षक रहे। मंडी के हॉस्पिटल में भी उन्होंने अपनी बेहतरीन सेवाएं दीं। डॉ. राजदान के निर्देशन में उन्होंने मरीजों की सेवा करते बड़ी लोकप्रियता प्राप्त की। उदयपुर के महाराणा भूपाल राजकीय चिकित्सालय में भी उनकी सेवाएं यादगार रहीं। उनके पास जो भी मरीज आता, वह ठीक होकर जाता।

उन्होंने मादड़ी क्षेत्र में अपना निजी क्लिनिक खोला जहां खासतौर से मजदूर वर्ग का बेहतरीन इलाज कर अपनी पैठ जमाई। अपने निवास पर जो भी आता उसका इलाज करते। वे लोभी नहीं थे। सस्ते से सस्ता इलाज करने में विश्वास रखते थे। वे अपने माता-पिता के प्रति पूर्ण समर्पण भाव लिये रहे। प्रात: अस्पताल जाते समय वे अपने माता-पिता से आशीर्वाद लिए बिना कभी नहीं गये। मेडिकल के क्षेत्र में उनकी सेवाएं, उनका व्यवहार और उनका सरल चित्त लम्बे समय तक स्मरणीय रहेगा।

दीवाली पर चारों ओर.....

(पृष्ठ दो का शेष)

कुछ दिन बाद घड़ल्या गाने वाली सातों सहेलियों की शादी हो गई। सभी अपने-अपने ससुराल चली गई। बहुत समय बाद जब वे पुन: दीवाली के त्यौहार पर मिलीं तो उनमें से एक ने अपनी सहेली की साड़ी के पल्लू में छोटी सी चूहिया बांध दी। बिचारी चूहिया जोर से चिल्लाने लगी तब उसकी साथिनों ने अपने-अपने हाथों में मूसल लेकर उसके साथ हंसी मजाक करना प्रारंभ कर दिया। एक अजीब तमाशा सा हो गया। बात बहुत बढ़ गई। बढ़ती-बढ़ती उसकी सुसराल तक जा पहुंची। सुसराल में सास ने उसे बहुत डांट-फटकार सुनाई। पति ने भी उसके साथ कम नहीं बिताई।

इस पर पत्नी नाराज हो गई और 'एलो थांरा छोरा-छोरी' कहकर अपने पीहर की ओर चलती बनी। पति से रहा न गया। वह उसे ढूंढ़ने निकला। गांव के चौराहे पर बैठे पटेल से उसने पूछा। पटेल के उसका रंग-रूप पूछने पर उसने बताया कि वह लम्बी-सी, कुछ पतली-सी, हाथ में लाख का लाल चूड़ला पहने है। पटेल ने कहा - पास ही वह जो वट वृक्ष है उसकी खोखल में बैठी विश्राम कर रही है।

घड़ल्यो म्हारो लाड़लो सैर में भाग्यो जायरे भाई
सैर में लागो कांटलो ताई के घरे जाय रे भाई
ताई दीधी नीसणी देवजी के घरे जाय रे भाई
देवजी दीधा पान फूल मगरी बेटो खायरे भाई
मगरी दीधी लात की सात गुड़िन्दा खायरे भाई
सातां मेली गोरड़ी सातां रे राता पागारे भाई
पल्ले बांधी ऊंदरी स्यूं-स्यूं करती जायरे भाई
हाथे बांध्यो मूसलो धम-धम करतो जायरे भाई
लूंमा केरी लाकड़ी ने घणी-घणी कूटी ओ राज
कूटी तो थोड़ी ने खेंची घणी
डेरी में लाई डचोकी ओ राज
ए लो थारां छोरा-छोरी
म्हें म्हारे पीहर जास्यां ओ राज
गाम पटेलां भाईला म्हारो गोरी ने जाता देखी ओ राज
कसी थारी गोरड़ी ने कस्यो गोरी को रूप ओ राज
लांबी गोरी पातली ने हाथ गलाल्यो चूड़लो राज
देखी थी भाई देखी थी बड़ला की खोखल देखी थी।

इस प्रकार किशोर-किशोरियों में दीवाली नई उमंग, नया जोश एवं नया जीवन लेकर आती है। उनके साथ नाचती-गाती, हंसती-खेलती एवं सोती-जागती है।

लड़कों में यह दीवाली हीड़ गीतों के रूप में लमछराई मिलती है। यह हीड़ मिट्टी का बना एक बड़ा दीपक होता है जिसमें कपास-बीज कपासिया रख तेल से तर कर दिये जाते हैं। इस हीड़ को गन्ने से बांध दिया जाता है और उसकी लम्बी डांडी हाथ में पकड़ ली जाती है। इसमें गन्ने के छोटे-छोटे गट्ठे तथा चणबोर डाले जाते हैं। मारवाड़ में काचर, बोर, मतीरों का अधिकाधिक उपयोग किया जाता है। इसीलिए उधर कहावत चल पड़ी- 'दीयाळी रा दीया दीठा, काचर बोर मतीरा मीठा।'

यह हीड़ पितरों को प्रकाश भी देती है। उन्हें यथास्थान पहुंचाने में उनकी राह को आलोकित करती है। कहते हैं श्राद्ध पक्ष में जब समग्र पितर-देव धरती पर चले आते हैं तो वे इतना अधिक खा-पी लेते हैं कि यहीं सो जाते हैं। यह हीड़ उन्हें जगाकर उनके घर का रास्ता बताती हुई उन्हें यथास्थान पहुंचाती है। इस हीड़ को लड़के घर-घर हीड़ाते हैं। गीत गाते हैं। तेल इकट्ठा करते हैं और धानचून तथा पैसा आदि पाते हैं।

अत्यंत दुबली-पतली हरणी को देखकर जब उससे यह प्रश्न किया गया कि बहिन हरणी तू इतनी दुबली क्यों हो गई हो? यदि तुम्हारा कोई सहारा नहीं है तो तुम मेरे मामे के घर चलो वहां तुम्हें मैं अच्छे कट्ठे गेहूं की बनी घूघरी खिलाऊंगा। बस यही बात गीत बन गई और न जाने कब से, जब-जब दीवाली आती है बालक-बालिकाओं के कंठों से स्वत: ही अपनी मधुर राग में निकल पड़ती है-

हरणी हरणी थूं क्यूं दूबली ए चाल म्हारे देस
मामे रांधी घुघरीए, धोली तली को तैल
धोरे-धोरे केवड़ो रे क्यारे-क्यारे फूल! सल्ला...
ऊंडी-ऊंडी बावड़ी रे मांय भंवर की बेल
पाणी वाली पातली रे चेवड़ो ढीलो मेल! सल्ला...

दीवाली के दिन दीवाली के स्वागतार्थ लड़के अपने हाथों में माटी की बनी हीड़ लेकर घर-घर में हीड़ हींचने जाते हैं। इस हीड़ में एक मिट्टी का दीप जलता है।

हीड़ हींचो, पया मेलो, तैल पूरो
गायां रे घूघरा, भैंस्यां रे रमझोळा!
आज दीवाली काले खेंकरो।

हीड़ गीत गाकर पैसे एकत्रित करते रहते हैं। अन्य दिनों की तरह आज के दिन वे जौ-ज्वार आदि न लेकर केवल पैसे ही लेते हैं। साथ ही साथ आज दीवाली का त्यौहार, जिसकी बहुत दिनों से प्रतीक्षा की जा रही थी, आ गया है तथा कल खेंकरा (रामारामी अथवा गोवर्द्धन पूजा का दिन) है। इस बात की सूचना भी वे देते रहते हैं। दीवाली के दूसरे दिन भोर में भी-

साइलो माइलो छड़ी राम को रे निकल्यो हणुमान
लंका-लंका जाई जो रे देवता रा असवार

तथा 'आम्बा में तो में तूंबो रे' गीत गाकर दीवाली समाप्ति समारोह मनाते हैं।

इसी हीड़ के साथ हरणी और सल्ला सायजादी के उल्लेख वाले गीत भी बालकों में बड़े लोकप्रिय हैं। इन गीत कथानकों के संबंध में विशेष ज्ञातव्य नहीं मिलने पर इनका अध्ययन-अनुसंधान भी बड़ा रोचक और दिलचस्प हो सकता है। यह हीड़ जहां एक तरफ दीपक का सूचक है वहां दूसरी ओर विशिष्ट गीतों का सूचक भी है। यह हीड़ पुरुषों में भी प्रचलित है। तब प्रत्येक घर से मिठाई और नारियल देकर इन हीड़ गायकों को विदाई दी जाती है। कहीं-कहीं घरों में जितने पुरुष होते हैं उतनी हीड़ें जलाई जाती हैं। छोटों की ओर से बड़ों को हीड़ देने का रिवाज भी शुभ माना गया है। कहीं-कहीं हीड़ लाये व्यक्ति को तेल का पानी पिला कर चांदी का रूपया देकर विदा किया जाता है।

दीवाली पर दवात के साथ बही पूजन

दीवाली से नया वर्ष शुरू हो जाता है। अत: व्यापारी अपनी बहियां बदल देते हैं। नये रूप में खाते-पानड़े शुरू करने के लिए दीवाली को लक्ष्मी-पूजन के साथ नई बही का पूजन भी किया जाता है। बही खोलते ही प्रारम्भ में कुंकुम का सातिया मांडा जाता है। दवात में पुरानी स्याही की जगह नई स्याही भरने के लिए उसे भीतर-बाहर से पीली, लाल अथवा ईंटी मिट्टी से खूब रगड़ा जाकर आक के पत्तों से चमकाया जाता है। दवात पीतल की विविध तरह की होती है। लिखने के लिए बरू की नई कलम तैयार की जाती है।

दवात की स्याही सामान्य स्याही नहीं होकर विशेष रूप से तैयार की जाती है। जिन घरों में लक्ष्मी-पूजन, बही-पूजन होता, वहां महीने- पन्द्रह दिन पूर्व से स्याही तैयार करने का उपक्रम प्रारम्भ कर दिया जाता। यह स्याही साल भर वैसी ही चमक दिये रहती। देशी-पद्धति से स्याही तैयार करने में बड़ी मेहनत लगती। इसकी कई दिनों तक घुटाई की जाती।

यह स्याही काली होती जो शुभ मानी जाती और इसके लिखे अक्षर वर्षों तक वैसी ही चमक लिये रहते। इसमें सर्वाधिक तो काजल ही काम आता। काजल के लिए एक बड़ा मिट्टी का दीपक जलाया जाता। उसकी लौ से काजल प्राप्त करने के लिए उस पर एक दूसरा दीपक औंधा रख दिया जाता जिससे काजल तैयार होता रहता। स्याही के अनुपात को देखते जितना काजल जरूरी होता उतना प्राप्त होने तक दीपक जलता रहता। दीपक को दीवाण्या कहते। रूई को हथेली में लम्बी फैला दूसरे हाथ से बंटी देते बत्ती यानी वाट तैयार करते।

काजल के साथ निश्चित मात्रा में सादा पानी, धावड़ी गूंद का पानी, गर्म लाख का पानी, लीला थोथा एवं अन्य चीजें मिलाकर प्रतिदिन घुटाई की जाती। यह स्याही स्वाभाविक तौर पर बाजारू स्याही से हर दृष्टि से अधिक गुणवत्ता लिये होती। इससे लिखावट भी स्पष्ट चमकदार तथा वर्षों तक बनी रहने वाली होती।

ऐसी स्याही अन्यों को भी वितरित की जाती। प्रत्येक गांव में ऐसे सेठ, साहूकार होते जो बड़ी मात्रा में स्याही तैयार कराते। अपने पिताश्री का साया उठने पर मैंने घर में तो लक्ष्मी-पूजन नहीं देखा किन्तु इतना याद है कि दीवाली के एक दिन पूर्व दवात की सफाई करने के बाद मैं उसे कभी गांव के सेठ चन्दनमलजी दक तो कभी हीरालालजी मुर्डिया की दुकान पर रख आता और दीवाली के दूसरे दिन वह दवात ले आता। उनकी पूजा में हमारी दवात भी रखी जाती। उसके लच्छा बान्धा जाता और पूरी स्याही से भर दी जाती। वर्ष भर उससे बहीड़ों, बहियों में मांग-तांग तथा हिसाब की खतनी खताते।

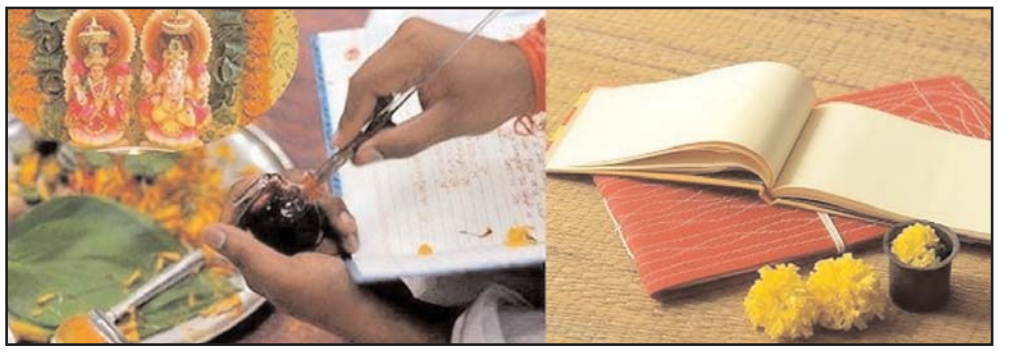

पीतल की यह दवात 150-200 वर्ष पुरानी है। उससे भी बड़ा कलशनुमा गुंबजदार उसका ढक्कन है। वह दवात आज भी बड़े यत्न से मेरे पास सम्भाली हुई है। आंख में डालने का काजल तैयार करने के लिए घी का दीपक जलाकर उस पर उतरी मटकी की ठीकरी उल्टी पाड़ देते। रूई के साथ नीम के सफेद ताजे फूल मिलाकर बाती बनाई जाती। जो काजल पड़ता उसमें उचित मात्रा में घी मिलाकर उसे एकमेक कर दिया जाता। यह काजल मुख्यत: बच्चों की आंखों में लगाया जाता और इसी से उसके चेहरे-गाल-ललाट पर अंगुली से मामे लगाये जाते।

- म. भा.

पार्श्वकल्ला
PARSHVAKALLA

PARSHVAKALLA PUBLIC RELATIONS
PARSHVAKALLA PAPERS
PARSHVAKALLA ADVERTISERS
मुक्तक प्रकाशन सम्पति संस्थान
शब्द रंजन (विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक)
प्रतिष्ठान : 'पार्श्वकल्ला' 13 14, म्यूनिसिपल शॉप, चेतना होटल के पास, चेटक सर्कल, उदयपुर 313004 (राज.) फोन : + 91 294 2429291, मो. 94141-65391
निवास : 904, आर्ची आर्केड, राम-लक्ष्मण वाटिका के पास, न्यू भूपालपुरा, उदयपुर-313001
E-mail : drtuktakbhanawat@gmail.com

SAI TIRUPATI UNIVERSITY, UDAIPUR

(Approved under Section 2(f) of UGC Act 1956)

Web: www.saitirupatiuniversity.ac.in | Email: info@saitirupatiuniversity.ac.in

ADMISSION OPEN 2024-25

PIMS PACIFIC INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES

• M.B.B.S. • MD/MS • M.Sc. in Medical Sciences | Contact : 95878 90081, 95878 90096

PIMS VENKTESHWAR INSTITUTE OF PARAMEDICAL SCIENCES
9257016003, 9587890142

• Diploma (Approved by RPMC)
- Radiation Technology
- Operation Theater Technology
- Medical Laboratory Technology
- ECG Technology
- Cath Lab Technology.
- Dialysis Technology,Blood Bank Technology,
- Endoscopy Technology,
- EEG Technology, Ophthalmic
- Technology

• B.Sc.
Medical Lab Technology, Ophthalmic Technology, Radio Imaging Technology

PIMS VENKATESHWAR INSTITUTE OF PHARMACY
(Approved by PCI) 9257016004, 9587890082

• D. Pharm • B. Pharm

PIMS VENKTESHWAR COLLEGE OF PHYSIOTHERAPY
9257016002, 958789082

• B.P.T. • M.P.T.

PIMS RESEARCH PROGRAM
9587890082, 9358883194

- Ph.D. (Nursing)
- Ph.D. (Anatomy)
- Ph.D. (Bio-Chemistry)
- Ph.D. (Microbiology)
- Ph.D. (Pharmacology)
- Ph.D. (Physiology)
- Ph.D (Management)
- Ph.D (Physiotherapy)

PIMS VENKTESHWAR SCHOOL/COLLEGE OF NURSING
9587890082, 9257016001

• G.N.M. • B.Sc. (Nursing)

• M.Sc. Nursing
Child Health, Mental Health, Community Health, Midwifery and Obstetrical, Medical Surgical

PIMS VENKTESHWAR INSTITUTE OF FASHION TECHNOLOGY
9672978017, 9587890063

• Fashion Design • Journalism & Mass Communication • Interior Design
(Graduation/ Post Graduation/ Diploma/ Advance Diploma)

PIMS VENKTESHWAR INSTITUTE OF MANAGEMENT STUDIES
9672978017, 9672978038

• BBA (International Business)
• MBA (Hospital Administration & Health Care Management)

PIMS INSTITUTE OF COMPUTER SCIENCES
9672978017, 9587890063

• Bachelor of Computer Application (B.C. A)

PIMS PACIFIC DENTAL COLLEGE & HOSPITAL
(Recognised by DCI) 9116132834

• B.D.S • M.D.S

ADMISSION HELPLINE : 9587890082, 9358883194

PIMS HOSPITAL, UMARDA, UDAIPUR

NABH ACCREDITED

Emergency : 0294-3510000

EMAIL : INFO@PACIFICMEDICALSCIENCES.AC.IN |
WEB : WWW.PACIFICMEDICALSCIENCES.AC.IN |
UMARDA RAILWAY STATION ROAD, UDAIPUR (RAJ.)

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 904, आर्ची आर्केड, राम-लक्ष्मण वाटिका के पास, न्यू भूपालपुरा उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत।
फोन : 0294-2429291, मोबाइल-9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।